भगवत् कृपा

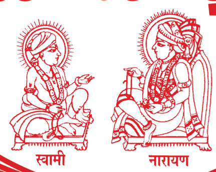

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 41 अंक : 6 | 12.12.2018 बुधवार (नवंबर - दिसंबर) | वार्षिक शुल्क : 111.00

सुहृदभाव के रंगों से
दिव्य युगलबंधु को भक्ति का अर्घ्य चढ़ाने चलो... महातीर्थ सांकरदा !

आइए...

दिनाँक 27 (गुरु), 28 (शुक्र), 29 (शनि) व 30 (रवि) दिसंबर 2018 के महामंगलकारी चार दिन

गुणातीत समाज के आद्य सर्जक, प्रणेता एवं प्राणाधार

गुरुहरि काकाजी और **गुरुहरि पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव** के

अंतिम चरण के दौरान

गुजरात के सांकरदा महातीर्थ के भव्य नूतन मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा का

दर्शन करके-साक्षी बन कर, योगी परिवार का गौरव बढ़ाने हेतु अंतर से भक्ति अदा करें और

प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद प्राप्त करके नए वर्ष 2019 का शुभारंभ करें...

अहो ! नूतनवर्ष का कृपाप्रसाद

प्रति वर्ष दीपावली-नूतन वर्ष के आगमन पर कई मुक्तों के हृदय में एक उत्कंठा होती है कि हम अपने 'प्रगट प्रभु' के पदार्पण एवं आशिष से नए वर्ष की मंगल शुरुआत करें... इसी कारण,

4 नवंबर 2018 की दोपहर को प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ प्रशांतविहार में रहते **पू. आर.पी. गुप्ताजी** के घर दीवाली के निमित्त गए। अगले दिन **5 नवंबर–धनत्रयोदशी** की सुबह **पू. राहुल अग्रवाल** की दुकान एवं **पू. प्रमीतभाई संघवी** की फॅक्ट्री पर गए और सायं प.पू. गुरुजी की निश्रा में स्थानीय एवं आउटस्टेशन के भक्तों ने महापूजा में गुरुहरि काकाजी महाराज के सूर्य वाले लोगो के चाँदी के सिक्कों का पूजन करवाया। महापूजा के अंत में **प.पू. गुरुजी** ने सच्चे धन की व्याख्या करते हुए आशीर्वाद दिया–

आज धनतेरस के दिन सभी लक्ष्मी का-धन का पूजन करते हैं। हमने भी प्रतीक के रूप में चाँदी के सिक्कों का

'अन्नकूटोत्सव' 8 नवंबर, 2018

ग्वाल बाल लाल जमे मदन गोपाल...

भाजपा के उपाध्यक्ष **श्री श्याम जाजूजी** एवं उनके साथ **श्री अनिल गुप्ताजी** अन्नकूट दर्शन हेतु पधारे।

पूजन किया। दरअसल स्वामिनारायण संप्रदाय ***'प्रगट' का संप्रदाय*** *है। 'प्रगट' के भक्तों के लिए भगवान और संत उनका सच्चा धन हैं। हम बोलते भी हैं कि भगवान और संत की बदौलत हमारा जीवन है। स्वामिनारायण भगवान ने कितनी करूणा करी कि भगवान रखे भगवत्स्वरूपों की परंपरा धरा पर अखंडित रख दी और उसके ज़रिए हमें काकाजी की गोद मिली।* ***सच्चा पूजन ये है कि हमारा संबंध काकाजी के साथ, ऐसे भगवत्स्वरूप संत – मानो पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी के साथ दृढ़ हो।***

भगवान के वे वो प्रगट स्वरूप हैं, जिन्हें हमने सिर्फ देखा नहीं, बल्कि इनके साथ जीवन जीया – जीवन जीते हैं। इन्होंने भी हमें अपना माना है। जितना-जितना हमारा संबंध इनके साथ दिव्यभाव से दृढ़ होता जाएगा, इतनी हमारे धन की बरकत है।

आज के दिन और नई कोई बात नहीं करनी है। मैं कई बार ये बात करता हूँ कि भारत में हमें जन्म मिला, वो कितना बड़ा हमारा संस्कार होगा! 'महाबलवान' संस्कार होंगे, तब हमें भारत में जन्म मिला है। दुनिया में अन्य किसी देश की धरती पर भगवान आए नहीं हैं। हाँ, संत आए हैं। भगवान श्री राम, भगवान श्री महावीर, भगवान श्री कृष्ण, भगवान स्वामिनारायण ने अवतार भरतखंड में लिया। भारत की भूमि कितनी पवित्र होगी! हमारे भी कितने महाबलिष्ठ संस्कार होंगे, जो हमें भारत में जीवन जीने का मौका मिला! इससे भी ज्यादा हम ऐसे संत के जोग में आ गए। वर्ना, भारत में भी कितने लोग हैं? सभी का जीवन संतप्रधान होगा क्या?

भले ही कोई कहता हो कि वह नास्तिक है, लेकिन ह्युमन बिइंग नास्तिक हो ही नहीं सकता। ***स्व. श्री पंडित जवाहरलाल नेहरू*** *कहते थे कि मैं भगवान में नहीं मानता, मेरी भगवान में आस्था नहीं है। लेकिन, इन्होंने अपने वसीयतनामे में लिखा है –* ***मेरी अस्थियों को खेतों में बिखेरा जाए और थोड़े अंश गंगा में बहा देना।***

भीतर में रही प्रभु या धर्म के प्रति की दबी हुई आस्तिक भावना इससे बाहर आ गई। सो, कोई गलती से भी न माने कि हमें श्रद्धा है ही नहीं। हम तो हैं ही श्रद्धावान और अतिशय श्रद्धावान ये होना है कि मानवस्वरूप में मौजूद 'प्रगट प्रभु' के साथ हमारा संबंध दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाए। वो ही हमारे धन की सच्ची वृद्धि है, तरक्की है, सौभाग्य है, खुशहाली है – सच्ची दीवाली हमारी वो ही है।

6 नवंबर – अक्षरचौदस की दोपहर को गुजरात एपार्टमेन्ट में पू. हंसा दादी के घर गए। गुजरात एपार्टमेन्ट में रहते हरिभक्तों ने वहाँ एकत्र होकर प.पू. गुरुजी के दर्शन का लाभ लिया और दिल से माना कि एक **पू. हंसा दादी** के घर प.पू. गुरुजी की पधरावनी होने से सभी घरों पर प.पू. गुरुजी की पधरावनी हो गई!

7 नवंबर – दीपावली की सुबह नौ बजे से बहनें व भाभियाँ अन्नकूट के प्रसाद की सब्जियाँ काटने के लिए मंदिर एकत्र हो गईं। दोपहर को प.पू. गुरुजी एवं करीब सौ मुक्त **पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी** एवं **पू. राहुल अग्रवाल** के घर गए। वहाँ सभी ने दोपहर का प्रसाद लिया। सायं साढ़े सात बजे से मंदिर में महापूजा दौरान **'शारदा पूजन'** आरंभ हुआ। मुक्तों ने अपने बही-खाते पूजन हेतु रखवाए।

8 नवंबर – अन्नकूट, नूतनवर्ष की रात्रि बारह बजे के बाद धुन करके **प.पू. सुहृदस्वामीजी** ने कई मुक्तों के साथ मिल कर अन्नकूट का महाप्रसाद कढ़ी, चावल, मिक्स सब्जी बनाना शुरू किया और इसी दौरान अन्य कई मुक्तों ने सूखे व्यंजनों को कलात्मक रीति से सजाना शुरू किया। प्रातः 6:30 बजे से हरिभक्त अपने घरों से श्री ठाकुरजी को भोग लगाने के लिए ताजे व्यंजन लेकर आने लगे। भाभियों ने हर वर्ष की तरह

भक्तिभरे हृदय से पूरी रात जाग कर ये सभी व्यंजन बना कर भेजे थे। करीब दस बजे प.पू. गुरुजी मंदिर के पीछे के परिसर में सभा मंडप में पधारे। मंच की पृष्ठभूमि पर भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत परंपरा के सभी स्वरूपों के दर्शन हो रहे थे और प.पू. गुरुजी की ओर से नूतन वर्ष का संदेश लिखा था–

बीता वर्ष भूलें और भविष्य की चिंता न करें ;
प्रगट प्रभु के आसरे व बल से रोज जीयें...

वार्षिक स्नेहमिलन की इस सभा में पू. अजय-संजय तनेजाजी, पू. राकेशभाई, पू. डॉ. दिव्यांग, पू. हृदय, पू. अनूप टांगरीजी ने भजन प्रस्तुत किए। पू. वच्छराजजी, पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी एवं पू. दीपक अग्रवाल (मुंबई) ने अपने अनुभवों द्वारा सभी की ओर से आशिष याचना की। मुंबई के पू. रमेशभाई त्रिवेदी इस मंगल अवसर पर दिल्ली नहीं आ पाए, परंतु आधुनिक तकनीक का लाभ लेते हुए, ऑडियो द्वारा से अपनी अलंकृत भाषा में उन्होंने प.पू. गुरुजी के प्रति अपने भाव प्रकट किए।

प्रति वर्ष की भाँति प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **पू. राकेशभाई** ने दीवाली कार्ड पर लिखे आशीर्वाद को पढ़ना शुरू किया और तकरीबन आठ मिनिट निम्न वार्ता करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने मानो सत्संग का सार बता दिया –

पूर्वजों से हमें संस्कार में मिला है और हमारी प्रणाली है कि दिवाली-नूतन वर्ष जैसे शुभ दिनों पर देवमंदिर जाना... इसी प्रणाली के ज़रीये मैं दो दिन से देखता हूँ कि ज़्यादातर सभी का मंदिर आना रहा है। मैं कई बार कह चुका हूँ कि वैसे आप जो रेग्युलर आते हैं वे और आउट स्टेशन्स में भी हमारे 'गुणातीत परिवार' के जो हैं, उनके लिए ***'अन्नकूट उत्सव'*** *एक* ***'गेट टुगेधर'*** *है। जगत में भी हम देखते हैं कि अलग-अलग जगह पर रहते हुए एक परिवार के सदस्य भी दिवाली के दिनों में अपने पुश्तैनी घर पर पहुँच जाते हैं। गुजरात में किसी से पूछो तो कहते हैं– 'गामडे जइये छीए।' दीवाली मनाने के लिए वे गांव जाते हैं। इसी तरह इस मंदिर को अपना 'बड़ा घर' समझ कर काकाजी का कुनबा इकट्ठा हो जाता है। काफी समय से एक-दूजे से न मिलने के कारण आपस के सुख-दुःख बाँटते हैं। भगवान मिलने के बाद दुःख तो रहता नहीं, सो आनंद की बातें करके-फ्रेश व हल्के फूल बन कर हर तरीके की चिंता इत्यादि का बोझ प्रगट प्रभु पर छोड़ देते हैं। यहाँ लिखा है कि भविष्य की हम चिंता न करें, क्योंकि प्रगट के उपासकों के लिए तो प्रभु की इच्छा ही जीव का प्रारब्ध बनता है। हमारा कर्म हम पर हावी हो ही नहीं सकता। महाराज के तो आशीर्वाद हैं कि हम सब काल, कर्म और माया से परे हैं। अरे ! वे हम पर तनिक भी हावी होने से डरते हैं। सारी दुनिया इनसे डरती है कि काल कठिन आ गया तो क्या करेंगे ? कर्म कुछ ऐसे हो जाए तो भुगतना पड़ेगा और माया में गए तो उसके प्रपंच में फंस जाएँगे। पर, अपने यहाँ ऐसा हो ही नहीं सकता।*

...साधु-संतों, बड़े-बुजुर्गों के पाँव छू कर उनसे आशीर्वाद लेना।

हमारा पुण्य कैसे बढ़ सकता है, उसका हमें ख्याल नहीं है। पर, इस प्रक्रिया में ***'लॉ ऑफ इन्डक्शन'*** *काम करता है।* ***बड़े-बुजुर्गों ने जो पुण्य इकट्ठा किया होता है, वो पुण्य उनके पैर छूने से हमारे अंदर सीधा ट्रांसमिट हो जाता है-अंदर चला जाता है।***

...सभी को विदित है कि अवतार पुरुषों व विभूतिस्वरूपों के वचन भी उनका स्वरूप ही हैं।

शिक्षापत्री में ***महाराज*** *ने लिखा है –* ***मेरी वाणी मेरा स्वरूप है।*** *यानि – शिक्षापत्री में उन्होंने वचन द्वारा जो-जो आज्ञा की है, वो साक्षात् महाराज का स्वरूप है। उस वचन के मुताबिक हम चलते रहेंगे, तो वह महाराज का पूजन किए बराबर पुण्य हो जाता है।*

स्वामीजी *ने कई बार कहा है – भगवान की मूर्ति से*

अधिक भगवान का नाम है। भगवान के नाम से अधिक इनकी आज्ञा है।

***काकाजी** ने आगे एक और बात करी थी – आज्ञा से भी अधिक इनकी मरज़ी – इनकी अनुवृत्ति है। मरज़ी और अनुवृत्ति एक ही चीज़ है। हम जितना इनकी मरज़ी में जीएंगे, उतना भगवान हम पर फिदा होते जाएँगे।*

*मरज़ी क्या है? एक ही मरज़ी है कि **'सर्वोपरिभाव से' हम में भगवान की दृढ़ता हो** कि हमें जो 'प्रगट प्रभु' मिले हैं, वे सर्वोपरि हैं। **'सर्वोपरि' का मतलब** ये न समझें कि दूसरे देवी-देवताओं से ऊंचे हैं वगैरह-वगैरह – वो कम्पेरिज़न की ये बात नहीं है। **वे काल, कर्म, माया और स्वभाव से परे हैं** – यह समझना है।*

*तो, ऐसे सर्वोपरि भाव से भगवान का निश्चय करें और **उनके संबंध वाले मुक्तों** के मतलब – निष्ठा वाले, आत्मबुद्धि और प्रीति से जीते मुक्तों के **सच्चे सगे** बनें। **आत्मबुद्धि और प्रीति से जीने का मतलब खूब समझकर रखना कि हमें हक़दावा नहीं करना है कि हम आपके आत्मीय हैं, तो हमारा इतना क्यों रखा नहीं? अपेक्षा और उपेक्षा से रहित होकर** आत्मबुद्धि और प्रीति से सिर्फ **हमें जीना है।** यह बोलना बड़ा आसान है, पर वर्तना कठिन है। अपेक्षा और उपेक्षा का मतलब यह है कि मानो सारा समाज कहीं जा रहा हो और हमें यदि मालूम न हो, तो समझना कि कसर, भूल और गलती हमारी है। कैसे? सभा में बैठते हुए हम ध्यान से कोई बात क्यों नहीं सुनते? किसी भी कारण हम रह गए और मन में संकल्प उठे कि मुझे नहीं ले गए, तो समझना कि हमें आत्मबुद्धि और प्रीति नहीं है। हम सिर्फ-सिर्फ आत्मबुद्धि और प्रीति का दावा करने वाले हैं, हक़ जमाने वाले हैं।*

तो, आज के दिन हम अपना ये बॅरोमीटर खूब जाँच लें कि हम किस प्रकार की - किस केटेगरी की आत्मबुद्धि से जीते हैं। जैसे अभी वच्छराज ने सभा में बताया कि आज का दिन लेखा-जोखा करने का दिन है कि हमने क्या कमाया? क्या घाटा किया? यदि इसी नापातोली में हम रहेंगे कि मेरा रखा, मेरा नहीं रखा, मुझे कहा, मुझे नहीं कहा, तो समझ लें कि हम किस केटेगरी में पड़े हैं। यूँ सोच कर नए साल के अंदर हम आगे बढ़ें...

दीवाली कार्ड का निरूपण पूर्ण होने ही आया था कि इसी दौरान भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष **श्री श्याम जाजूजी** एवं उनके साथ **श्री अनिल गुप्ताजी** पधारे। उन्होंने प.पू. गुरुजी को शाल अर्पण करके नमन किया। प.पू. गुरुजी ने भी हार एवं शाल द्वारा दोनों का स्वागत करवाया। श्री श्याम जाजूजी एवं श्री अनिल गुप्ताजी ने सभा को संबोधित किया।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी के साथ गणमान्य अतिथियों एवं हरिभक्तों ने अन्नकूट के थाल एवं आरती के लिए **'कल्पवृक्ष'** हॉल की ओर प्रस्थान किया। श्री ठाकुरजी एवं गुणातीत स्वरूपों को प्रत्यक्ष मान कर सुव्यवस्थित रीति से विभिन्न व्यंजनों को परोसा हुआ था और मध्य सिहांसन के ऊपर प.पू. गुरुजी ने सभी की ओर से निम्न प्रार्थना लिखवाई थी –

हे प्रभु ! इस नैवेद्य द्वारा हमारा 'अहम्' जीम कर,
हमें हल्का फूल बनाना
और
सभी के साथ मिलजुल कर
ब्रह्मानंद करते हुए जीता कर देना...

पू. राकेशभाई, पू. जवाहर सिंहजी, पू. हृदय, पू. डॉ. दिव्यांग, पू. चिराग एवं पू. विश्वास ने 'ग्वाल-बाल-लाल, जमे मदनगोपाल' थाल गाकर भोग लगाया और 'लेता जाओ रे सांवरिया' गाकर मुखवास अर्पित करने के बाद अन्नकूट आरती आरंभ हुई। आरती के दौरान ही हमारे आत्मीय स्वजन समान अशोकविहार क्षेत्र के विधायक **श्री राजेश गुप्ताजी** एवं पूर्व विधायक **श्री महेन्द्र नागपालजी** भी अन्नकूट आरती का दर्शन करने आए।

तत्पश्चात् मंदिर के पीछे के परिसर में सर्वप्रथम प.पू. गुरुजी सभी गणमान्य अतिथियों के संग पंक्तिबद्ध होकर कढ़ी, चावल व मिक्स सब्जी का प्रसाद लेने गए और... सभी हरिभक्तों को यह विशिष्ट प्रसाद वितरित किया जाने लगा। दोपहर साढ़े तीन बजे तक लगभग पंद्रह सौ-दो हज़ार मुक्तों ने अन्नकूट का प्रसाद लिया। तदोपरांत सवा चार बजे धुन करके पंक्तिबद्ध होकर स्वयंसेवक श्री ठाकुरजी के समक्ष लगे विभिन्न व्यंजनों को मंदिर के पीछे प्रांगण में लेकर आए। तब उपस्थित मुक्तों ने वह प्रसाद लिया और...

जैसे कि प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. महंतस्वामिजी महाराज ने अन्नकूट के बर्तन साफ़ करने की सेवा की महिमा बताई है; सो बहनें-भाभियाँ अन्नकूट के बर्तन मांजने की सेवा में जुट गईं। कुछ बहनों-भाभियाँ का समूह अन्नकूट के प्रसाद के डिब्बे बनाने की सेवा में रत हो गया, ताकि आउटस्टेशन के जो मुक्त अन्नकूट पर नहीं आ पाए, उन्हें समय पर प्रसाद भेजा जा सके।

यूँ, पूरे दिन प्रभु की स्मृतियों में ही तल्लीन रहते हुए, सभी मुक्तों ने प.पू. दीदी के वरद् हस्तों से श्री ठाकुरजी के पान का प्रसाद लेकर रात्रि नौ बजे अपने घरों के लिए विदाई ली।

❀❀❀

प्रबोधिनी एकादशी पर प्रभु द्वारा सब्जी की हाट...

भगवान स्वामिनारायण ने समय-समय पर अपने आश्रितों को अनुपम स्मृतियाँ देकर उन्हें न केवल अपनापन दिया, बल्कि हर प्रकार से उनकी रक्षा भी की। एक बार कार्तिक मास में **भगवान स्वामिनारायण** भुज में विराजमान थे। उसी के नज़दीक कंथकोट गाँव में उनका **भक्त कचराभाई** रहते थे। वे सब्जी बेच कर मुश्किल से अपना जीवन निर्वाह करते थे। उन्हें जब पता चला कि श्रीजी महाराज भुज में विराजमान हैं, तो उन्हें प्रभु को अपने घर बुला कर भोजन कराने की इच्छा हुई। वे श्रीजी महाराज के पास गए और अपने घर आने की प्रार्थना की,

तब श्रीजी महाराज ने कहा– *हाँ, हम सब संतों और हरिभक्तों के संग ज़रूर आएँगे।*

पर, उन्होंने महाराज से कहा–*प्रभु, केवल आप अकेले ही आइएगा।*

महाराज ने भी उनकी अकिंचन हालत को समझ कर अकेले आने की 'हाँ' भर दी और... एक दिन महाराज कचराभाई के घर अचानक जा पहुँचे। सब्जी की दुकान पर बैठे कचराभाई से महाराज ने कहा–

मुझे बहुत ज़ोर से भूख लगी है, तो जल्दी से खाने के लिए कुछ बना दो।

कचरा भगत ने बताया– *मेरी पत्नी तो मायके गई है और मैं घर पर अकेला हूँ।*

महाराज बोले– *तो, तुम ही मेरे लिए बैंगन की सब्जी और बाजरे की रोटी बना दो।*

कचरा भगत कुछ संकोच से बोले– *परंतु, भगवन् अभी यह समय तो ग्राहकी का है। इस समय सभी सब्जी खरीदने आते हैं। अगर मैं भोजन बनाने के लिए बैठ जाऊँगा, तो दुकान पर कौन बैठेगा ? और... आप तो जानते हैं, मेरा रोज़ का कमाना है और रोज़ का खाना है। यदि धंधा नहीं होगा तो आज चूल्हा कैसे जलेगा ?*

सारी बात सुन कर महाराज ने कहा– *यह तो गंभीर समस्या है। पर, मैं तो भोजन करके ही जाऊँगा। ऐसा करते हैं कि दुकान पर बैठ कर मैं सब्जी बेचता हूँ और आप मेरे लिए भोजन का प्रबंध करो।*

कचरा भगत खाना बनाने के लिए घर के भीतर गए और मन ही मन सोचने लगे–

।। जय स्वामिनारायण ।।
अपनी हाट
19 नवंबर, 2018
प्रबोधिनी एकादशी

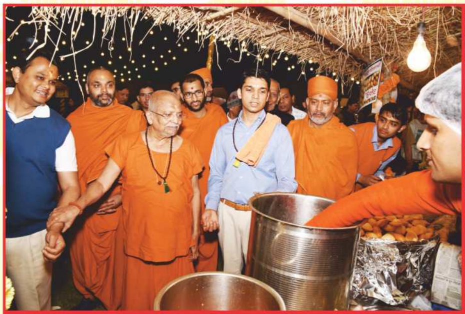

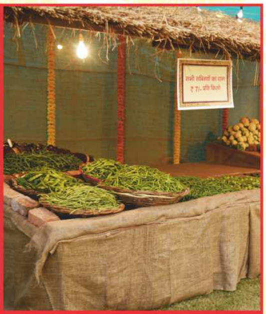

आज नकद
कल उधार

प्रभु तो दयालु हैं, पूरी की पूरी टोकरी यदि किसी को दे दी, तो मेरा घाटा हो जाएगा।
परंतु, महाराज ने एक कुशल दुकानदार की भाँति सारी सब्जी बेच कर कमाई के सारे पैसे कचरा भगत को दिए। तत्पश्चात् भोजन किया और भगत से कहा – *तुम आज ही यह कंथकोट छोड़ दो और आधोई में जाकर बस जाओ।* महाराज के आदेश का पालन करते हुए कचरा भगत आधोई चले गए। बाद में पता चला कि कचरा भगत जिस दिन कंथकोट से निकले, उसके दूसरे ही दिन राजा के सिपाहियों ने कर वसूली के कारण पूरा कंथकोट तोप-गोलों से नष्ट कर दिया था। यूँ, भगवान स्वामिनारायण ने अपने आश्रित की आजीविका की समस्या तो हल कर ही दी, अपितु प्राणों की भी रक्षा की।

भगवान स्वामिनारायण की इस दिव्य लीला की स्मृति में स्वामिनारायण संप्रदाय के मंदिरों में प्रबोधिनी एकादशी के दिन श्री ठाकुरजी के समक्ष सब्जियों की हाट लगाई जाती है और उन प्रासादिक सब्जियों को हरिभक्त खरीद कर घर ले जाते हैं।

उत्सवप्रिय श्रीजी महाराज एवं गुणातीत परंपरा के प्रभुधारक संतों का निरंतर स्मरण होता रहे, इसी हेतु सभी 'प्रत्यक्ष स्वरूप' भी छोटे से छोटे प्रसंग को पर्व में परिवर्तित कर देते हैं। प.पू. गुरुजी की प्रत्येक चेष्टा ऐसी ही होती है। प्रबोधिनी एकादशी पर लगती इस हाट को प.पू. गुरुजी ने नाम भी **'अपनी हाट'** दिया है। जहाँ भी **'अपना'** शब्द आता है, वहाँ आपसी समन्वय की भावना उत्पन्न हो जाती है।

अबकी बार **19 नवंबर – प्रबोधिनी एकादशी** के मंगलकारी दिन मंदिर के पीछे के पार्क में प.पू. गुरुजी को राज़ी करने के लिए स्वयंसेवकों ने एक सब्जी मंडी का माहौल खड़ा कर दिया था। **थोड़ी दूर** श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति स्थापित करके **छोटा-सा मंदिर बना कर पू. दीपक सेठजी** को पुजारी के रूप बिठाया था। उसी साथ **प.पू. गुरुजी, संतों एवं हरिभक्तों के बैठने की व्यवस्था की थी।** मंडी में एक तरफ सब्जी के स्टॉल लगाए थे, जहाँ सत्संग की भाभियाँ-लड़कियाँ सब्जी वाली की वेशभूषा में बैठी थीं। उसी के सामने तीन-चार व्यंजन के स्टॉल लगाए थे, जिसे हरिभक्तों ने ही तैयार किया था। मंडी के बीचोंबीच भुट्टा सेंकने के लिए भी सत्संग की भाभियाँ व लड़कियाँ बैठी थीं। **'एक ही दाम की दुकान है, साझी ये संत-श्याम की'** – भजन बजता रहता था। सारी सब्जियाँ प्रभु के प्रसाद के रूप में थीं। इसलिए प्रति परिवार को पाँच किलो सब्जी 'टोकन मनी' लेकर दी जा रही थी, जिसे सभी मेईन कांऊटर पर दे रहे थे।

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं – *मेरा जन्म ही सत्संग में हुआ है...मानो, सत्संग ही मेरा परिवार है...*
उसी प्रकार, आज निजी स्वार्थ और चमक-दमक से भरपूर जगत के पाश से कोसों दूर रहे सत्संग परिवार के बच्चे भी मंदिर को ही अपना घर-संसार मानते हैं। इसलिए प.पू. गुरुजी की बस यही चाहना होती है कि ये बच्चे किसी भी तरह खुश रहें। सो, प.पू. गुरुजी की आज्ञा से इस हाट में एक जादूगर, बंदर-मदारी, घोड़ा और ऊँट मंगाया था; जिसका लाभ केवल बच्चों ने नहीं, बल्कि बड़ों ने भी लिया !

प.पू. गुरुजी की निश्रा में प्रति वर्ष आयोजित 'अपनी हाट' का यह कार्यक्रम एक अलग ही दुनिया का एहसास कराता है। कई मुक्तों तो इस पर्व की खूब राह देखते हैं। सच, हृदय गद्‌गद् होकर गा उठता है – *'तें करी कमाल ओ स्वामी, एक ब्रह्मसमाज वसावी !'* और... इतनी बड़ी दुनिया में हम जो इस समाज के जोग में आए, वह हमारा कितना बड़ा अहोभाग्य है !!

❀❀❀

जिस भक्त को जैसा रूप सुहाता, तुमने निभाया उसी से वो नाता...

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि संत अपने आश्रित के जीवन को अमृतमय बनाते हैं। संत को जो जीव जिस दृष्टि से निहारता है या परिस्थिति अनुसार जिसको जैसी आवश्यकता होती है, संत उसकी उसी प्रकार से परवरिश करते हैं। **प.पू. गुरुजी** की ऐसी चेष्टाओं-ख़ूबियों और ख़ास तौर से **अपनेपन की शैली के फलस्वरूप उत्तरभारत में स्वामिनारायण सत्संग का विकास हुआ है।**

अतः दिल्ली मंदिर से जुड़े सत्संगी प.पू. गुरुजी से विचार-विमर्श और उनकी आज्ञा प्राप्त करके ही अपने सभी प्रकार के कार्य संपन्न करते हैं। उसी के अनुरूप जून महीने में हमारे पुराने जोगी **पू. राजकुमार शर्माजी** ने अपने छोटे भतीजे **पू. निष्काम** की शादी **पू. आनंद शुक्लाजी** की बड़ी बेटी **पू. महिमा** से तै की। प.पू. गुरुजी ने 23 नवंबर को शादी करने के लिए कहा। लेकिन, **संत की तो प्रत्येक क्रिया अपने प्रभु प्रेरित ही है** और उन्हीं में लयलीन रह कर वे जीव का किस प्रकार श्रेय करते हैं, उसका दर्शन प.पू. गुरुजी ने कराया...

गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती एवं प.पू. गुरुजी के 75वें प्राकट्योत्सव के पावन वर्ष 2012 में **पू. आई.एम. गर्ग साहेब** एवं उनके सुपुत्र **पू. गौरव गर्गजी** प.पू. गुरुजी के संपर्क में आए। अल्प समय में ही वे सपरिवार गुणातीत कुनबे का एक अभिन्न अंग बन गए हैं। इसी वर्ष मई महीने में सत्संग की बेटी **पू. बाती** ने गुरुहरि योगीजी महाराज के प्राकट्य दिन एवं प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा दिन पर जब भागवती दीक्षा ग्रहण की, तब तुरंत उन्होंने पू. बाती को अपनी बेटी के रूप में अपनाया और... इस वर्ष सितंबर महीने में **पू. गौरवजी** एवं उनकी धर्मपत्नी **पू. सुचिका भाभी** ने खूब आग्रह किया कि सत्संग के मुक्तों एवं बच्चों के साथ मसूरी उनके रिज़ॉट में शिविर के लिए प.पू. गुरुजी आएँ। उनकी भावना के वश प.पू. गुरुजी ने 11 से 15 अक्तुबर, नवरात्रे के दिनों में करीब 130 मुक्तों के साथ **'मसूरी किड्स शिविर'** का कार्यक्रम बनाया।

इस शिविर का आयोजन करवाते हुए प.पू. गुरुजी ने मंदिर के स्टाफ के समक्ष अपनी इच्छा ज़ाहिर की कि इस शिविर में तकरीबन अपने सभी मुक्त मौज़ूद होंगे; तो क्यों न **12 अक्तुबर** को ही महापूजा के दौरान चि. निष्काम और सौ.कां. महिमा की शादी करवा दी जाए! इस जॅस्चर द्वारा प.पू. गुरुजी की एक यह भावना थी कि श्री ठाकुरजी के समक्ष, संतों-हरिभक्तों की हाज़िरी में ये दोनों दांपत्य जीवन की मंगल शुरुआत करें और दूसरा–**समाज की भेड़चाल से आज के आंडबरयुक्त माहौल में न चलते हुए, सादगीपूर्ण दिव्य वातावरण में** नए जीवन में प्रवेश करें।

सो, वर-वधु एवं उनके परिवार वालों से लेकर शिविर में जाने वाले मुक्तों को तनिक भी ख्याल न पड़े, इस रीति से प.पू. गुरुजी ने मंदिर के युवकों एवं बहनों द्वारा शादी की पूर्व तैयारियाँ करवाई। शादी का कार्ड, दुल्हा-दुल्हन के पहने जाने वाले कपड़े, आभूषण एवं लग्नविधि की संपूर्ण सामग्री की व्यवस्था करवाई। चि. निष्काम और सौ.कां. महिमा के परिवार के सभी सदस्यों को शिविर में चलने का आग्रह किया। शादी के अनुसार सभी बढ़िया वस्त्र पहन कर तैयार हों, इस हेतु प.पू. दीदी ने पू. गार्गी दीदी से सबको यह मॅसेज दिलवाया कि शिविर में नवरात्रे निमित्त 12 अक्तुबर की सायं गरबा करेंगे, सो हरिभक्त अच्छा कुर्ता-पजामा और भाभियाँ लहँगा-चुन्नी या बढ़िया साड़ी पहनें। यूँ किसी को कानों-कान भनक भी नहीं पड़ने दी कि मसूरी के रिज़ॉट में प.पू. दीदी की निश्रा में शादी होगी।

रॉयल ऑर्चिड फोर्ट रिज़ॉट-मसूरी में ‘सरप्राईज़्ड डेस्टिनेशन मॅरेज’

कार्यक्रमानुसार 11 अक्तुबर की सुबह करीब आठ बजे सभी गाड़ियों द्वारा मसूरी के लिए रवाना हुए। प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी एवं कुछ मुक्त सुबह करीब साढ़े ग्याह बजे की फ्लाईट से निकल कर दोपहर साढ़े बारह बजे देहरादून पहुँचे। एयरपोर्ट से निकल कर मसूरी के लिए रवाना हुए कि मसूरी रोड की शुरुआत में बने **श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर** पर प.पू. गुरुजी दर्शन करने के लिए रुके। पिछले कुछ सालों में प.पू. गुरुजी जब-जब मसूरी गए, तब इस मंदिर पर दस-पंद्रह मिनिट ज़रूर ठहरते हैं। पर, **अबकी बार तो प.पू. गुरुजी तकरीबन डेढ़ घंटा यहाँ रुके और वहाँ का कारोबार संभालने वाले संत ने भी प.पू. गुरुजी के प्रति अपने भाव व्यक्त करते हुए जलपान कराया। यूँ शिव मंदिर को तीर्थत्व प्रदान करने के बाद** प.पू. गुरुजी रिज़ॉट के लिए रवाना हुए और सायं पौने पाँच बजे के करीब वहाँ पहुँचे। रिज़ॉट में पू. गर्ग साहेब भी अपने परिवार सहित उपस्थित थे। सायं साढ़े पाँच बजे तक बाय रोड आने वाले मुक्त भी पहुँच गए। सभी के लिए अल्पाहार की अच्छी व्यवस्था की हुई थी।

अल्पाहार के बाद प.पू. गुरुजी ने सभी को साँतवे फ्लोर पर बनी बैठक में एकत्रित करवाया। संध्या आरती एवं धुन के बाद प.पू. गुरुजी ने एलान किया कि कल शाम को महापूजा में चि. निष्काम एवं सौ.कां. महिमा की शादी करेंगे। **चि. निष्काम एवं सौ.कां. महिमा तुरंत ही-सहजता से प.पू. गुरुजी की मरज़ी में नतमस्तक हो गए !** प.पू. गुरुजी ने शादी का सर्वप्रथम कार्ड चि. निष्काम को दिया व उसके द्वारा सौ.कां. महिमा को भिजवाया। पू. गर्ग साहेब सहित उपस्थित सभी मुक्त चकित हो गए !

दरअसल, सत्संग को खूब समर्पित कुटुंब के पू. चेतन एवं चि. निष्काम के पिता पू. सुरेश शर्माजी जब छोटी आयु में अक्षरनिवासी हुए, तब प.पू. गुरुजी ने दोनों बच्चों से कहा था – *तुम चिंता नहीं करना, मैं बैठा हूँ न !* सो, एक पिता की कमी पूरी करते हुए प.पू. गुरुजी ने पू. चेतन की शादी दिल्ली मंदिर में करवाई थी और चि. निष्काम का विवाह करवा के अपना क़ौल पूरा कर रहे थे।

हालाँकि सौ.कां. महिमा के माता-पिता एवं ताऊजी-ताईजी शिविर में आए ही थे, लेकिन भगवान स्वामिनारायण का वचन – 'सत्संगी वैष्णव ही हमारी नात-जात, बिरादरी है...' को महत्ता देते हुए प.पू. गुरुजी ने पू. गौरव गर्गजी एवं पू. सुचिका भाभी को आज्ञा दी कि वे सौ.कां. महिमा का कन्यादान करें। **प.पू. गुरुजी के ऐसे ही जॅस्चर हरिभक्तों को एक-दूजे के नज़दीक लाते हैं और अपनेपन से जोड़ते हैं।**

अगले दिन सुबह बैठक में फिक्सड टाईम धुन के बाद शादी की तैयारियाँ शुरु हुई। प.पू. दीदी की निश्रा में मेहंदी व हल्दी की रस्म हुई। तब बहनों-भाभियों ने भजनों पर गरबा किया। दोपहर को भोजन के पश्चात् सभी सायं शादी के लिए तैयार हो गए। प.पू. गुरुजी के पूर्व आदेश से पू. गौरव गर्गजी ने शादी की सारी व्यवस्था कर रखी थी। रिज़ॉट के मुख्य द्वार के करीब चि. निष्काम को मसूरी में अंग्रेजों के समय चलती एंटीक रिक्शा में बिठाया गया। ढोल की ताल पर झूम कर हरिभक्तों ने अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की। रिज़ॉट के स्वागत द्वार पर वधु पक्ष की ओर से पू. सुचिकाभाभी, पू. मायाभाभी और पू. ममताभाभी ने दूल्हे का स्वागत किया। तत्पश्चात् सभी छट्ठी मंज़िल पर गए, जहाँ लॉन में पू. अभिषेक भइया ने महापूजा का आयोजन किया था। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की बातें जब पढ़ते हैं, तो कई बार आश्चर्यचकित होते हैं कि स्वामी को व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र की कैसी जानकारी थी। उसी प्रकार, **प.पू. गुरुजी का विभिन्न क्षेत्रों में कार्यकौशल्य देखते ही बनता है।** गर्ग परिवार ने पू. बाती को अपनी बेटी के रूप में स्वीकारा है और वे दिल से यह संबंध निभाते भी हैं। सो, गर्ग परिवार की उसी भावना को और प्रगाढ़ करते हुए, प.पू. गुरुजी ने पू. आशिष से निमंत्रण का एक फ्लॅक्स बनवाया, जिसमें पू. बाती का नाम

पू. गौरव भइया एवं पू. सुचिका भाभी की सुपुत्री के रूप में अंकित करते हुए पू. आई.एम. गर्ग साहेब की ओर से सभी को शादी के लिए आमंत्रित किया गया था।

'आज सखी आनंदनी हेली...' भजन एवं स्वामिनारायण धुन के दिव्य वातावरण में महापूजा के समक्ष पू. **अभिषेक भइया ने चि. निष्काम एवं सौ. कां. महिमा को सत्संग की सप्तपदी के अनुसार अग्नि के सात फेरे दिलवाए। पू. गौरव भइया एवं पू. सुचिका भाभी ने सौ. कां. महिमा का कन्यादान किया।** रात्रि साढ़े आठ बजे तक महापूजा में शादी संपन्न हो गई। तदोपरांत बहनों-भाभियों ने भजनों पर गरबा किया और पुराने जोगी **पू. जनार्दनभाई** की सुपुत्री **पू. योगिता** जो कि नागपुर रहती हैं, लेकिन इस शिविर के लिए ख़ास आई थीं, उन्होंने महाराष्ट्र का **लोकनृत्य 'लावणी'** प्रस्तुत करके अपना हर्ष व्यक्त किया। रात्रि का भोजन लेने के बाद सातवें फ्लोर की लॉबी में प.पू. गुरुजी की निश्रा में सभी ने रात्रि को सोने से पहले होती **'तीन मिनिट धुन'** की और विश्राम के लिए गए।

अगले दिन **13 अक्तुबर** की सुबह प.पू. गुरुजी की निश्रा में 6:30 बजे की फिक्स्ड टाईम धुन करने के बाद सभी नित्यविधि करके नाश्ता करने के बाद रिज़ॉट के कॉन्फ्रेन्स हॉल में सत्संग सभा के लिए एकत्र हुए। पू. गर्ग साहेब ने दीप प्रज्ज्वलित किया। प.पू. गुरुजी के आगमन हेतु **पू. गर्ग साहेब** ने धन्यवाद एवं ख़ुशी ज़ाहिर की और प्रार्थना की कि प्रति वर्ष ऐसे ही आते रहना। मुंबई के **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** एवं **पू. रमेशभाई त्रिवेदी** ने अपनी अलंकारिक भाषा से प.पू. गुरुजी के प्रति अपने भाव व्यक्त किए। प.पू. गुरुजी ने भगवान स्वामिनारायण के जीवनचरित्र में से कुछ प्रसंग पढ़वाए। सभा के बाद दोपहर का प्रसाद लेने के बाद प.पू. गुरुजी आराम में गए। सायं आरती-धुन के पश्चात् पू. राकेशभाई एवं पू. डॉ. दिव्यांग ने भजन प्रस्तुत किया। शिविर के इस दूसरे सत्र में **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** ने सत्पुरुष की मरज़ी एवं संबंध वाले मुक्तों की महिमा तर्क संगत से समझने के लिए प्रार्थना की एवं **पू. लक्ष्मी शुक्लाजी** ने स्वानुभवों से प.पू. गुरुजी को धन्यवाद किया। प.पू. गुरुजी ने भगवान स्वामिनारायण के जीवन चरित्र में से प्रसंग पढ़वा कर समझाए। थोड़ा सर्दी-जुकाम होने के कारण रात का भोजन करने के बाद प.पू. गुरुजी **'तीन मिनिट की धुन'** करवा कर जल्दी आराम में चले गए।

14 अक्तुबर की सुबह सर्दी-जुकाम होने के बावजूद भी प.पू. गुरुजी रोज़ाना की तरह फिक्स्ड टाईम धुन में सबको दर्शन देने के लिए सुबह 6:30 बजे बैठे। धुन के बाद थोड़ी देर आराम में गए। सुबह पौने दस बजे के करीब सातवें फ्लोर के बाहर के बरामदे में धूप में बैठ कर प.पू. गुरुजी ने पूजा में धुन की और नाश्ता किया। तत्पश्चात् हरिभक्तों को स्मृतियाँ देने के लिए प.पू. गुरुजी वहीं बैठे रहे और अमदावाद के पू. दिलीपभाई ठक्कर एवं पू. पुनीत मल्होत्रा ने ग्रुप फोटोज़ खींची। तबियत का ख्याल करते हुए हरिभक्तों के आग्रह पर प.पू. गुरुजी पुनः आराम में गए।

इस दौरान मंदिर के स्टाफ एवं हरिभक्तों ने रिज़ॉट के छट्ठे फ्लोर के लॉन में कुछ खेल-कूद द्वारा आनंदोब्रह्म किया। दरअसल, पू. गर्ग साहेब का रिज़ॉट में सुविधाएँ बहुत अच्छी हैं और प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में तो यहाँ दिल्ली मंदिर का एहसास होता है। सो, किसी मुक्त को मसूरी में कहीं घूमने जाने का मन ही नहीं होता। विश्राम के बाद प.पू. गुरुजी को अच्छा महसूस हुआ, तो दोपहर को तीन बजे के करीब उन्होंने भोजन लिया और फिर सातवें फ्लोर के बरामदे में धूप में बैठ कर, रिज़ॉट के सभी कार्यकर्ताओं को हर बार की तरह **'स्मृति भेंट'** दी। करीब एक घंटा यह कार्यक्रम चला। सायं संध्या आरती व धुन के पश्चात् पू. राकेशभाई व पू. डॉ. दिव्यांग ने भजन प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् **पू. राकेशभाई, पू. समीरभाई** एवं **पू. जगदीशजी** ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि मुमुक्षु बड़ा हो या छोटा, हमारा सत्संग उसे अंतर्दृष्टि से जीना सिखाता है। जैसे कि **पू. गौरव गर्गजी** प.पू. गुरुजी से केवल पाँच वर्ष से जुड़े हैं, लेकिन कुटुंबभाव से युक्त इस सत्संग की गहराई को काफ़ी समझे हैं। उन्होंने अपने ऐसे निजी प्रसंग बताए। मसूरी जाने से एक-दो दिन पहले परिचय में आए भोपाल के **पू. विजय सोनी** इस शिविर में आए थे। इन चार दिनों में उन्होंने प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में मुक्तों के साथ सेवा करते जो अनोखा माहौल देखा, उस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बात की और... तबियत ढीली होने के बावजूद भी प.पू. गुरुजी ने दस बजे तक भगवान स्वामिनारायण के जीवनचरित्र में से प्रसंग पढ़वा कर सभा की। किड्स शिविर की यह अंतिम सभा थी क्योंकि अगले दिन 15 अक्तुबर को तो दिल्ली के लिए प्रस्थान करना था। सभा के बाद रात का प्रसाद लेने के बाद 'तीन मिनिट की धुन' करके आराम में गए।

अगले दिन सुबह फिक्स्ड टाईम धुन के बाद सभी साढ़े आठ बजे नाश्ता करने गए। तब वहाँ **पू. गर्ग साहेब** आए और अत्यंत भावुक होकर बोले–

*जैसे मुंबई में गणपति विसर्जन के समय कहते हैं– **'गणपति बापा मोरया अगले बरस तू जल्दी आ...'** इस तरह आप सब लोग अगले साल जल्दी आना!*

पू. गर्ग साहेब के ये शब्द सुन कर वहाँ उपस्थित सभी मुक्तों का दिल भर आया कि पू. गर्ग साहेब को सत्संग, संतों, युवकों और बहनों के प्रति कितना अपनापन है!

प.पू. गुरुजी ने पूजा में धुन की और उसके बाद सुबह करीब दस बजे सभी गाड़ियाँ दिल्ली के लिए रवाना हो गईं। प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के साथ करीब पच्चीस मुक्त दोपहर तक वहाँ ठहरे। ये सभी दोपहर करीब एक बजे दिल्ली लौटने देहरादून एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। जो चार गाड़ियाँ प.पू. गुरुजी को देहरादून एयरपोर्ट पर छोड़ने आई थीं, वे भी दिल्ली के लिए रवाना हो गई। सुबह बाय रोड निकले मुक्त एवं प.पू. गुरुजी के साथ फ्लाईट से निकले मुक्त सायं साढ़े आठ बजे दिल्ली मंदिर पहुँच गए। चार गाड़ियों के मुक्त भी रात को साढ़े बारह बजे तक दिल्ली मंदिर पहुँच गए।

यूँ शिविर के दौरान हुए **'सरप्राईज़्ड डेसटिनेशन मॅरेज'** ने सभी को आश्चर्यकारी स्मृतियाँ दे दीं...

❀❀❀

न मे भक्तः प्रणश्यति !

श्रीमद् भगवद्गीता, 9-31

- ***भगवान तो अपने भक्त** की रक्षा करने के लिए सदैव तत्पर हैं। कैसे? जैसे पलकें आँख की रक्षा करती हैं, हाथ कंठ की रक्षा करते हैं, माँ-बाप बच्चों की रक्षा करते हैं और राजा प्रजा की रक्षा करता है–ठीक उसी प्रकार भगवान हमारी रक्षा में हैं।* **प्र. 1, 22**
- *किसी भी प्रकार की चिंता आए, तो भगवान को सौंप देना। हम तो निर्बल हैं और वे बलवान हैं, सो वे रक्षा करने में समर्थ हैं। जैसे प्रहलाद्‌जी की रक्षा करी थी, यूं कई प्रकार से रक्षा करेंगे।* **प्र. 1, 312**
- *छोटे बच्चे को डर लगे तब वह अपने माँ-बाप के गले से चिपक जाता है; वैसे ही हमें जब भी कोई दु;ख आए, तो भगवान का भजन करना, स्तुति करना; सो भगवान रक्षा करेंगे ही।* **प्र. 1, 319**
- *भगवान के लिए हमने जो-जो किया है और कर रहे हैं वह सब वे जानते हैं और जिनकी गोद में सिर रख दिया है, वे निश्चित रक्षा करेंगे और हमारी तो भगवान खूब मान लेते हैं।* **प्र. 1, 331**

– स्वामी की बातें

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के आशीर्वाद **'गुणातीत समाज'** की कृपा से हमें प्राप्त हुए प्रभुधारक संत अकसर दोहराते हैं या पढ़वाते हैं। दूसरी ओर **गुरुहरि काकाजी महाराज** हमेशा कहते – *सुबह उठते ही और रात को सोते समय प्रभु को हमेशा याद करके 'धन्यवाद' करो।*

ये बातें सुन कर हम सहज ही सिर हिला देते हैं, लेकिन इसकी गहराई और महत्ता को नहीं समझते। इतना ही नहीं, प्रसंग पर अनुभव होने के बावजूद भी अपनी जड़ता के कारण उसे विस्मृत कर देते हैं। पर, जैसे हम अपने स्वभाव के अधीन वर्तते हैं, वैसे ही प्रभु अपने भक्त की रक्षा करने का स्वभाव नहीं छोड़ते।

जो प्रभु को पल-पल धार कर जीते हैं, जिनका संपूर्ण जीवन ही प्रभु को अर्पित है उनकी सर्व प्रकार से रक्षा के लिए तो वे उनके साथ-साथ रहते ही हैं। हाल ही में दिनाँक **22 नवंबर 2018** को घटी निम्न घटना को पढ़ कर यदि हम कल्पना में जाएंगे, तो शरीर के रोंगटे खड़े हो जाएँगे, क्योंकि इस घटना में हमारे पवई मंदिर के प्राणसमान **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** एवं **पू. अरुणभाई** मौज़ूद थे।

सभी को विदित है कि पिछले एक वर्ष से पवई मंदिर के संत सांकरदा में पुनःनिर्मित हो रहे मंदिर एवं गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव के लिए निरंतर कार्यरत हैं। सो, उसी के संदर्भ में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अरुणभाई एवं पू. मितेशभाई सांकरदा गए थे। कार्य पूर्ण होने के बाद वडोदरा से फ्लाईट द्वारा 22 नवंबर की सायं मुंबई लौटे थे। प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं पू. अरुणभाई पवई मंदिर से आई 'ज़ाईलो' गाड़ी में बैठे, जिसे पू. संकेतभाई खेरे चला रहे थे। पू. मितेशभाई अपनी गाड़ी में घर चले गए।

और... पवई क्षेत्र में प्रवेश होने के बाद एक मोड़ पर 'ज़ाईलो' गाड़ी का हॉर्न बजने लगने लगा जो बंद ही नहीं हो रहा था। सो, पू. संकेतभाई देखने के लिए बाहर निकले। साथ में तीनों भाई भी बाहर निकले, तो देखा कि शॉर्ट सर्कीट के कारण बोनट में आग लगी थी। सो, उन्होंने जल्दी से गाड़ी में से सामान निकाला और... देखते ही देखते गाड़ी को जोर से आग लग गई और वह पूरी तरह जल गई! इस घटना से निम्न प्रसंगों की स्मृति हो गई...

* महाभारत के युद्ध के अंत में **भगवान श्री कृष्ण** ने रथ से उतर कर अपने प्रिय **अर्जुन** को रथ से उतरने के लिए कहा और फिर रथ पर विराजमान **श्री हनुमानजी** से रथ की ध्वजा जब उतरवाई, तो रथ तुरंत ही जल गया। यह देख कर अर्जुन के अचरज से पूछने पर श्री कृष्ण ने उत्तर दिया – *रथ तो युद्ध दौरान कर्ण ने बाण से पहले ही जला दिया था; लेकिन, मेरे प्रभाव के कारण जला नहीं था।*

देखते ही देखते गाड़ी को ज़ोर से आग लग गई!

✻ **15 अप्रैल 1951** की सुबह 9:30 बजे बेल्जियम के ब्रसेल्स एयरपोर्ट पर **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** ने **गुरुहरि काकाजी महाराज** को अंतर्प्रेरणा करके प्लेन में से उतरने की सूझ दी। सो, गुरुहरि काकाजी महाराज स्वयं तो उतर ही गए, साथ ही अन्य यात्रियों को भी उतरने का आग्रह किया कि मेरे गुरु ने मुझे प्रेरणा करी है कि तू नीचे उतर जा। सभी नीचे उतर गए और इंजीनीयर ने जब प्लेन के नज़दीक जा कर चॅक किया, तो वाक़ई कहीं लीकेज थी। और... दस मिनिट में ही पूरा प्लेन धमाके के साथ धूं-धूं जल गया। यूँ गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने गुरुहरि काकाजी महाराज की अद्‌भुत रक्षा की थी।

इसी प्रकार, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अरूणभाई जो कि सांकरदा की पूर्व तैयारियों के निमित्त सभी स्वरूपों के दर्शन करके आ रहे थे, तब भगवान स्वामिनारायण एवं सभी प्रत्यक्ष स्वरूप ही मानो उनकी गाड़ी में विराजमान रहे और हॉर्न के द्वारा उन्होंने बाहर निकलने का संकेत दिया।

गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी का कोटि-कोटि धन्यवाद कि हमारे गुणातीत समाज की इस अनमोल धरोहर की यूँ रक्षा करके उनसे जुड़े अनेक चैतन्यों को निश्चिंत कर दिया।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 16.12.'18,	रविवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(2)	दि. 19.12.'18,	बुधवार	–	एकादशी – व्रत
(3)	**दि.31.12.'18,**	**सोमवार**	**–**	**2019 – नए वर्ष के आगमन निमित्त 'ताड़देव' मंदिर में रात्रि 10:00 बजे 'मध्यरात्रि महापूजा'**
(4)	दि. 1.1.2019,	मंगलवार	–	2019 – नया साल प्रारंभ, एकादशी – व्रत
(5)	दि. 13.1.'19,	रविवार	–	लोहड़ी
(6)	दि. 14.1.'19,	सोमवार	–	मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(7)	दि. 17.1.'19,	गुरुवार	–	एकादशी – व्रत
(8)	**दि. 21.1.'19,**	**सोमवार**	**–**	**पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन**
(9)	दि. 25.1.'19,	शुक्रवार	–	**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्मृति स्थल पर** ***सायं 6:30 बजे ताड़देव मंदिर में अखंड परिक्रमा का शुभारंभ...***
(10)	दि. 26.1.'19,	शनिवार	–	प्रजासत्ताक दिन **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्मृति स्थल पर** ***सायं 6:30 बजे अखंड परिक्रमा की पूर्णाहुति...***
(11)	दि. 31.1.'19,	गुरुवार	–	एकादशी – व्रत, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का अक्षरवास-मुंबई
(12)	दि. 10.2.'19,	रविवार	–	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, **ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन**

R.N.I. 28971/ 77 ***(Air Mail)***
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052